ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 170-173**
ISSN NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-ISSN NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

जनसंचार माध्यमः अनुसूचित जातियों का सामाजिक आर्थिक उन्नयन

(वाराणसी जनपद के पिंडरा ब्लाक के अंतर्गत हिरामनपुर न्याय पंचायत पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ0 रामचन्द्र
असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र, श्री सुदिष्ट बाबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय सुदिष्टपुरी, रानीगंज, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-01.09.2024, Revised-10.09.2024, Accepted-16.09.2024 **E-mail : rambhu82@gmail.com**

सारांशः ***मीडिया और संचार समाज के विशेष रूप से हाशिए के और दलित वर्ग के लोगों के विकास के लिए महत्वपूर्ण उपकरण है। पूर्वांचल के अनुसूचित जाति के लोग एक ऐसा हाशिए पर रहने वाला समुदाय है जो जाति व्यवस्था का खामियाजा भुगतता है, जो उनकी पिछड़ी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के लिए जिम्मेदार है। इन लोगो की स्थिति जटिल है क्योंकि वे समाज के पिछड़े और गरीब हिस्से में से एक में रहते हैं, जहां विकास की कमी पाई जाती है। सामाजिक विकास के सन्दर्भ में पूर्वांचल को राजनीतिक नेताओं की स्थानीय समस्याओं की चिंता के प्रति लापरवाही और अज्ञानता का सामना करना पड़ा। अध्ययन वाराणसी (पिंडरा ब्लाक के अंतर्गत हिरामनपुर न्याय पंचायत पर आधारित) में रहने वाले अनुसूचित जाति समुदाय के विकास के लिए जनसंचार द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में है। चूंकि व्यावसायिक विकास और सामाजिक स्थिति विकास के संकेतक हैं। इसलिए इन मापदंडों का अध्ययन यहां किया गया है। मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रकार के मीडिया और संचार को समझना है जो अनुसूचित जाति के लोग अपनी व्यावसायिक जरूरतों के लिए उपयोग करते हैं और उनमें से कौन सा इस उद्देश्य के लिए सबसे प्रभावी है। प्रस्तुत अध्ययन में जाति संबंधी भेदभाव को खत्म करने में मीडिया की भूमिका का भी विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि व्यावसायिक विकास में मीडिया और जनसंचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। सूचना के लिए सहकर्मियों और पेशेवर साथियों द्वारा संचार काफी प्रभावी है। व्यावसायिक समस्याओं के प्रभावी समाधान के लिए समाचार पत्र सर्वोत्तम माध्यम है।***

कुंजीभूत शब्द– जनसंचार माध्यम, आर्थिक उन्नयन, मीडिया और संचार, समुदाय, खामियाजां, सामाजिक विकास, लापरवाही

प्रस्तावना– वैश्वीकरण और उदारीकरण के युग में जनसंचार माध्यम महत्त्वपूर्ण भमिू निभाते हैं। समाज में संचार माध्यमों की भूमिका मूल रूप से वह प्रकार्य है जो यह बताता है कि समाज सं चार माध्यमों का उपयोग किस उद्देश्य के लिए करता है। समाज का सं चार माध्यमों से संबंध स्वआश्रित और परिवर्ती दोनों प्रकार का है। जनसं चार माध्यम समाज को तो प्रभावित करता ही है, साथ ही स्वयं भी समाज द्वारा प्रभावित होता है।

समकालीन विश्व में संचार के जन माध्यमों की भूमिकाएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। यह समाजीकरण का एक सशक्त माध्यम बन गया है। सामाजिक गतिविधियों पर नियंत्रणात्मक दृष्टि रखना संचार माध्यमों की अन्य महत्वपूर्ण भूमिका है। यह केवल परम्परा का वहन ही नहीं करता बल्कि यह सामाजिक आलोचना को भी स्वर देता है और इस रूप में सामाजिक नियंत्रण का साधन बनता है। जनसंचार माध्यम राष्ट्रीय विकास में तीन तरह से सहायक होते हैं। जनता को राष्ट्रीय विकास की सूचना देना, विकास प्रक्रिया में सहभागी बनाना, विकास के लिए आवश्यक तकनीकी दक्षता प्रदान करना। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं अनुसूचित जातियों के सामाजिक आर्थिक उन्नयन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। संचार साधनों के कारण ग्रामीण निवास में विकास के विविध पक्षों यथा–कृषि व तत्सम्बन्धी कार्यों, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक इत्यादि पक्षों में होने वाले परिवर्तनों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अध्ययन यथेष्ट रूप में करने का प्रयास किया गया है।

अनुसूचित जाति समुदाय भारत में प्रमुख जनसंख्या का निर्माण करता है। लेकिन वे हाशिए पर हैं, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदाय हैं। मीडिया और विज्ञापनदाता शायद ही उनके बारे में अध्ययन करने की कोशिश करते हैं क्योंकि उनके अध्ययन से कोई आर्थिक लाभ नहीं जुड़ा है। इस सन्दर्भ में समाजशास्त्रियों का कर्तव्य है कि अनुसूचित जाति के उत्थान में संचार की भूमिका का अध्ययन करे। अध्ययन ने निम्न उद्देश्यों एवं महत्व के साथ अनुसूचित जाति के लोगों के सामाजिक विकास में मीडिया के कार्य को भी देखा गया है:

1. व्यावसायिक जरूरतों एवं समस्याओं के निवारण में अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के जनसंचार माध्यमों और अन्य संचार का अध्ययन करना।
2. व्यावसायिक आवश्यकताओं के लिए सबसे प्रभावी मीडिया या संचार साधनों का पता लगाना।
3. जातिगत भेदभाव को समाप्त करने में मदद करने के लिए सबसे प्रभावी मीडिया का अध्ययन करना।

शोध प्राविधि–अध्ययन क्षेत्र पिंडरा ब्लाक के अंतर्गत हिरामनपुर पंचायत में निवास करने वाले 48 पुरुष एवं 48 महिलाओं को शामिल किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य लोगों में जनसंचार मध्यमो की विकास में भूमिका और नवाचार को अपनाने के लिए प्रेरित करना है जिससे क्षेत्र का समन्वित ग्रामीण विकास संभव हो सके। इस उद्देश्य हेतु प्राथमिक, तथा द्वितीयक स्रोत से प्राप्त आँकड़े का प्रयोग किया गया है। शोध समस्या संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। यह शोध पत्र व्याख्यात्मक व विश्लेषणात्मक अनुसंधान पर आधारित है। जनसंचार माध्यम सामाजिक परिवर्तन की गति को तेज करते हैं। यह लोगों को किसी भी समाज में कुछ नया प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है।

उद्देश्य–प्रस्तुत शोध पत्र का मूल उद्देश्य अनुसूचित जाति के बीच जनसंचार माध्यमों के प्रभाव की जांच करना है । अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1) सामाजिक आर्थिक विकास में जनसंचार मध्यमो की भूमिका की पहचान करना।

2) अनुसूचित जातियों पर जनसंचार मध्यमो के प्रभाव का विश्लेषण करना।

अनुसूचित जातियां –ये भारत में सबसे अधिक वंचित सामाजिक–आर्थिक समूहों में से हैं। भारत में समाज को विशिष्ट जाति व्यवस्था के आधार पर चार वर्णों में विभाजित किया गया है, जो भारतीय समाज के लिए विशिष्ट है। इस जाति व्यवस्था ने सभी मनुष्यों को एक श्रेणीबद्ध वर्ग में विभाजित कर दिया है जिसमें शूद्र चौथे स्तर पर हैं।1 इनका का मुख्य पेशा श्रम और उपरोक्त सभी वर्णों की सेवा करना था। वे जो काम करते थे, उसके लिए उन्हें सदियों तक अपमानित किया जाता था क्योंकि उन्हें नीच माना जाता था। हालांकि वे जो काम करते थे वे समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे, लेकिन उन्हें धार्मिक अनुष्ठानों से वंचित रखा गया था। समाज के इस वर्ग को सम्मान देने के लिए 1935 में भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया जिसमें समूह/समुदाय/जाति की एक सूची को आरक्षण दिया गया, जिसे पहले 'दलित' वर्ग के रूप में जाना जाता था। वे तब से अनुसूचित जाति का गठन करते हैं।2 वे भारतीय आबादी का 16.2 प्रतिशत और देश में 48 प्रतिशत गरीब हैं।3 जबकि उत्तर प्रदेश में वे राज्य की कुल जनसंख्या का 21.1 प्रतिशत हैं।[4]

अनुसूचित जाति के लिए आजीविका के लिए कृषि सबसे महत्वपूर्ण पेशा है, उनमें से 20 प्रतिशत खेती करने वाले हैं और 45.6 फीसदी कृषि मजदूर हैं 30.5 प्रतिशत योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार अन्य काम करते हैं ।[5] योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 1991 में अनुसूचित जाति के 74.50 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर थे। वे ज्यादातर कृषि पर निर्भर हैं जो अपने आप में एक बहुत ही जोखिम भरा व्यवसाय है और कम रिटर्न के साथ प्रकृति में मौसमी है और ये लोग आधे साल के लिए बेरोजगार हैं क्योंकि कृषि पूरे वर्ष नहीं की जा सकती है। उनमें से अधिकांश कृषि पर निर्भर हैं (वर्ष 1991 में 49.06 प्रतिशत) कम वेतन वाले थे।6

गरीबी रेखा से नीचे के लोगों में अनुसूचित जाति निम्नलिखित आंकड़े दर्शाती है। यह देखा गया है कि 1999–2000 में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली 27 प्रतिशत आबादी के मुकाबले अनुसूचित जाति की 36 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती थी जबकि शहरी क्षेत्रों में 38.47 प्रतिशत गरीबी रेखा से नीचे रहती थी। उत्तर प्रदेश में ग्रामीण क्षेत्रों में 43.65 प्रतिशत अनुसूचित जाति और शहरी अनुसूचित जाति के 43.51 प्रतिशत लोग 1999–2000 के बीच गरीबी रेखा से नीचे थे। वर्ष 2000 में सरकारी नौकरी में अनुसूचित जाति का प्रतिनिधित्व 16.41 प्रतिशत है जो काफी संतोषजनक है।[7]

साहित्य समीक्षा– मीडिया और संचार न केवल एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक सूचना पहुंचाते हैं बल्कि लोगों के जीवन को बदलने, शिक्षित करने और सामाजिक परिवर्तन की क्षमता रखते हैं। यह शिक्षा और और जागरूकता पैदा करता है जिससे व्यक्ति, समुदाय और राष्ट्र की आदत में परिवर्तन होता है। इसमें प्रबुद्ध करने, अज्ञान को दूर करने और जागरूकता के एक उपकरण की क्षमता है। यह अंधविश्वास को दूर करने में मदद करता है और मीडिया को मंच के रूप में उपयोग करने के लिए आम आदमी में विश्वास बढ़ाता है। यही कारण है कि हर समाज में मीडिया को इतना महत्व दिया जाता है और लोग अपने फायदे के लिए मीडिया में हेरफेर करने की कोशिश करते हैं। लेकिन यह मीडिया हाशिए के लोगों के विकास के लिए एक उपकरण भी है।

मतदान का अधिकार राजनीतिक भागीदारी का एक उपकरण है जिसका उपयोग अनुसूचित जाति के लोग किसी भी अन्य जाति की तुलना में अधिक करते हैं। लेकिन हमेशा यह देखा जाता है कि राजनीतिक दल अपने फायदे के लिए अनुसूचित जाति की मतदाता सूची में हेराफेरी करते हैं और वास्तविक राजनीतिक ताकत जमीनी स्तर पर स्थानांतरित नहीं होती है। संसदीय, विधान सभा और पंचायत चुनावों में उन्हें दिए गए आरक्षण से अनुसूचित जाति की राजनीतिक भागीदारी भी मजबूत हुई।[8]

पंचायत चुनाव में उत्तर प्रदेश की दलित निर्वाचित महिला सदस्यों पर किए गए एक अध्ययन में बताया गया है कि ग्रामीण स्तर पर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं ने दलित समुदाय के प्रतिभागियों को मजबूत या सशक्त नहीं बनाया। पंचायत राज के आरक्षण के बाद भी मीडिया रिपोर्टों के माध्यम से यह सामान्य अवलोकन है कि प्रमुख समूहों ने हाशिए पर रहने वाले समूहों विशेषकर दलितों के स्वयं को सशक्त बनाने के प्रयासों को बाधित करने के लिए विभिन्न उपायों का सहारा लिया।[9]

मास मीडिया और संचार न केवल लोगों को उनकी नौकरी और पेशेवर जीवन में मदद करते हैं बल्कि उनके समुदाय के बारे में सामाजिक जागरूकता भी लाते हैं। मीडिया समाज या समुदाय को एक इंसान के योग्य जीवन स्तर के बारे में जागरूक करने के लिए बनाता है जिससे समुदाय को पर्यावरण का आकलन करना संभव है या क्या यह इन मानकों को पूरा करता है। मीडिया द्वारा दिए गए संदेश लोगों को अपने बारे में अच्छा महसूस कराने में मदद करते हैं। मीडिया संदेशों के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन पारिवारिक वातावरण, स्कूल और सामाजिक जीवन में हो सकता है। जब हाशिए के लोग मीडिया संदेश प्राप्त करते हैं तो वे अपने जीवन की तुलना मीडिया की छवियों से करते हैं और मीडिया द्वारा बनाए गए मानकों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। वे उन सामाजिक मानदंडों के खिलाफ भी लड़ते हैं जो उन छवियों को बनाने की दिशा में उनकी प्रगति के रास्ते में बाधा डालते हैं।

विभिन्न तरीकों से संचार और जनसंचार माध्यम सामाजिक परिवर्तन की गति को तेज कर सकते हैं। मास मीडिया लोगों को समाज के पारंपरिक मूल्यों को बदलकर किसी भी समाज को कुछ नया प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। मास मीडिया समाज में नए विचार, फैशन, पोशाक, आहार प्रणाली, आवास पैटर्न, नए प्रकार के मनोरंजन, राजनीतिक विश्वास आदि लाता है। लोगों पर जन मीडिया के प्रभाव के संबंध में कुप्पुस्वामी (1976:13) की टिप्पणी है कि मास मीडिया

मदद करता है सामान्य लोगों को अपने स्वयं के अनुभवों से परे ज्ञान प्राप्त करने के लिए। इस तरह जनसंचार माध्यम लोकप्रिय संस्कृति के ताने–बाने को एक नए रूप में बदल देता है।

आकड़ा विश्लेषण और व्याख्या–

अनुसूचित जाति के लोगों की व्यावसायिक क्षमता के विकास में मीडिया की भूमिका

सारणी संख्या– 1

माध्यम	आवृति	प्रतिशत
टीवी	12	12.5
रेडियो / अखबार	24	25
इन्टरनेट	10	10.4
किसान / मित्र / सहयोगी	18	18.8
पंचायत प्रतिनिधि	8	8.3
सरकारी अधिकारी	14	14.6
उपरोक्त सभी	10	10.4
योग	**96**	**100**

जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि वे कौन से स्रोत हैं जो व्यवसाय संबंधी जरूरतों के बारे में जानकारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं? 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि समाचार पत्र/ रेडियो उनके व्यवसाय के लिए सूचना का अच्छा स्रोत है। 18.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अन्य किसान/ मित्र/उसी पेशे के लोग मददगार हैं। 12.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने टेलीविजन को सूचना के अच्छे स्रोत के रूप में पाया। जबकि 10.4 प्रतिशत लोग इंटरनेट को महत्वपूर्ण मानते हैं। 8.3 प्रतिशत लोग पंचायत प्रतिनिधि को और 14.6 प्रतिशत लोग सरकारी अधिकारियों को व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्रोत मानते हैं । वहीं 10.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उपरोक्त समस्त माध्यम ।

समस्याओं के समाधान के स्त्रोत का विवरण

सारणी संख्या– 2

समस्याओं के समाधान के स्त्रोत	आवृति	प्रतिशत
टीवी	10	10.4
रेडियो / अखबार	18	18.8
इन्टरनेट	4	4.2
किसान / मित्र / सहयोगी	36	37.5
पंचायत प्रतिनिधि	12	12.5
सरकारी अधिकारी	8	8.3
उपरोक्त सभी	8	8.3
योग	**96**	**100**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 37.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अन्य किसान/ मित्र/उसी पेशे के लोग समस्याओं के समाधान में सहयोग प्रदान करते हैं। 18.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि समाचार पत्र/ रेडियो, 10.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने टेलीविजन को, 4.2 प्रतिशत लोग इंटरनेट को, 12.5 प्रतिशत लोग पंचायत प्रतिनिधि को और 8.3 प्रतिशत लोग सरकारी अधिकारियों को समस्याओं के समाधान में सहयोगी मानते हैं वहीं 8.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उपरोक्त समस्त माध्यम सहयोगी है।

रोजगार हेतु संचार मध्यमो की भूमिका

सारणी संख्या– 3

संचार मध्यमो की भूमिका	आवृति	प्रतिशत
आवश्यक	22	22.9
अत्यधिक आवश्यक	28	29.2
न्यूनतम आवश्यक	18	18.7
आवश्यक नहीं	12	12.5
कह नहीं सकते	16	16.7
योग	**96**	**100**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 22.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने संचार मध्यमो को रोजगार हेतु आवश्यक माना है, 29.2 प्रतिशत ने अत्यधिक आवश्यक, 18.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने न्यूनतम आवश्यक जबकि 12.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने संचार मध्यमो को रोजगार हेतु आवश्यक नहीं माना तथा 16.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि कह नहीं सकते।

निष्कर्ष –प्रस्तुत शोध अध्ययन से पता चलता है कि अनुसूचित जाति के लोग अपनी व्यावसायिक जरूरतों के लिए सूचना के विभिन्न स्रोतों का उपयोग कर रहे हैं। इसमें टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्र और इंटरनेट जैसे मास मीडिया स्रोत शामिल हैं। जनसंचार माध्यमों के साथ काम करने वाले अन्य स्रोत हैं जो उन्हें सूचित करते हैं और व्यवसाय से संबंधित समस्याओं को हल करते हैं, जिसमें पंचायत, सरकारी अधिकारी और उनके सहयोगी / पेशे के अन्य लोग शामिल हैं। इन सभी स्रोतों में से अधिकांश उत्तरदाताओं ने अपने सहयोगी को व्यावसायिक आवश्यकताओं के लिए सूचना के सबसे प्रभावी स्रोत के रूप में पाया। समाचार पत्र उनके व्यवसाय की जानकारी देने में दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यवसाय से संबंधित समस्याओं के समाधान के संबंध में समाचार पत्र सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। व्यवसायों के लिए सबसे प्रभावी दो संचार स्रोत उभरे हैं, समाचार पत्र और सहकर्मियों से संचार। कृषि संबंधी कार्यक्रम के प्रसार के संबंध में टेलीविजन सबसे प्रभावी माध्यम है। उत्तरदाताओं के अनुसार अन्य प्रकार के व्यवसाय के लिए समाचार पत्र अधिक प्रभावी है। यह पूछे जाने पर कि क्या रोजगार के लिए मीडिया महत्वपूर्ण है, अधिकांश उत्तरदाताओं ने कहा कि मीडिया कभी–कभी ही महत्वपूर्ण होता है।

अनुसूचित जाति की सामाजिक स्थिति के उत्थान में मीडिया की भूमिका पर सर्वेक्षण के बारे में उन्होंने कहा कि शिक्षा और काम के स्थान पर जातिगत भेदभाव अभी भी मौजूद है। अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना है कि टेलीविजन और रेडियो प्रसारण कार्यक्रम जातिगत भेदभाव से संबंधित हैं। लेकिन जातिगत भेदभाव को खत्म करने के लिए टेलीविजन सभी मीडिया में सबसे प्रभावी है। जब मतदान पैटर्न पर निर्णय अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा किया जाता है तो परिवार के सदस्य की राय सबसे प्रभावशाली होती है। इसी तरह मीडिया भी जातिगत भेदभाव को खत्म करने में मदद करता है और टेलीविजन सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सुझाव–अध्ययन से यह प्रकट हुआ कि मीडिया अनुसूचित जाति के लोगों को उनके पेशे में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन पारंपरिक संचार माध्यम जैसे उनके और सहकर्मियों, समाज के लोगों या दोस्तों के बीच पारस्परिक संचार, पंचायत और सरकारी अधिकारियों द्वारा संचार अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए मीडिया को उनके पेशेवर विकास में अधिक मदद करके उनका विश्वास जीतने के लिए पारस्परिक संबंध स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। वे अपने पेशे से संबंधित कार्यक्रमों की अवधि बढ़ा सकते हैं या सबसे उपयुक्त समय बदल सकते हैं या विकासात्मक पत्रकारिता का एक नया प्रारूप पेश कर सकते हैं जो न केवल जानकारीपूर्ण बल्कि दिलचस्प भी है।

अनुसूचित जाति की सामाजिक स्थिति के संबंध में बहुत काम करने की आवश्यकता है। लोगों को उनकी सामाजिक स्थिति के बारे में सहानुभूति देने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। वे असली नायकों और जाति आधारित भेदभाव को मिटाने में योगदान देने वाले लोगों की कहानियां दिखा सकते हैं। अनुसूचित जाति समुदाय की युवा पीढ़ी शिक्षित और उन कानूनों को जानती है जो उन्हें अहिंसक तरीके से जाति आधारित अत्याचार से लड़ने में मदद कर सकते हैं। मीडिया नई पीढ़ी को अपने स्वयं के विकास और पूरे समाज के लिए नए पेशेवर रास्ते चुनने में भी मदद कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अंबेडकर बी आर, 1946, शूद्र कौन थे (वे भारतीय आर्य समाज में चौथे वर्ण कैसे बने), ठाकुर एंड कंपनी।
2. (भारत सरकार अधिनियम, 1935. पहली अनुसूची। पृष्ठ 217, 24 अगस्त 2021 को http://www-legislation-gov-uk/ukpga/1935/2/pdfs/ukpga_19350002_en-pdf
3. जनगणना 2001, 24 अगस्त 2021 को http://censusindia-gov-in/census/scheduled castes_and_sceduled_tribes-asp से प्राप्त किया गया।
4. जनगणना 2001, 24 अगस्त 2021 को http://censusindia-gov-in/tables_ Published/ A&Series/ A&Series_links/ t_00_005-asp से प्राप्त किया गया।
5. अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के विकास पर कार्य समूह की रिपोर्ट अनुसूचित जनजातियाँ मार्च 2005, 24 अगस्त 2021 http://planning commission-gov-in/ aboutus /taskforce/inter/inter_sts-pdf पृष्ठ 34, 35 अनुसूचित जाति का आर्थिक विकास। 24 अगस्त 2021 को http://ncsc-nic-in/files /Chapter :203_2-pdf से प्राप्त हुआ।
6. अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के विकास पर टास्क ग्रुप की रिपोर्ट, मार्च 2005 पृष्ठ 35 24 अगस्त 2021 को http://planning commission-gov-in/aboutus/taskforce /inter/inter_sts-pdf से प्राप्त हुआ।
7. गुप्ता डी, (2005) जाति और राजनीतिरू व्यवस्था पर पहचान, मानव विज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 24 अगस्त 2021 को https://www-scribd-com/document /78635881 /Caste & and & Politics & Identity & Over & System#download से प्राप्त हुआ।
8. बी.बी. मलिक और जया श्रीवास्तव दलितों की भागीदारी को समझना पंचायतों में महिला निर्वाचित प्रतिनिधिरू उत्तर प्रदेश के गाजीपुर और मऊ जिलों का एक अध्ययन जर्नल अ□फ रूरल डेवलपमेंट, खंड 30, संख्या (4) पृष्ठ 451 – 459 एनआईआरडी, हैदराबाद। 24 अगस्त 2021 को nirdprojms-in/index से प्राप्त किया गया।
9. पल्लवी, सिंह पी, जनएसबी, सामाजिक जागरूकता में मास मीडिया की भूमिका, इंटरनेशनल जर्नल अ□फ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज खंड 1 (01) अगस्त 2013, ख्आईएसबीएन 978–93–83006–16–8, पृष्ठ 34–38, 24 अगस्त 2021 dks https://giapjournals-com/index -php/hssr/article/19 से प्राप्त किया गया।

*****